

(8) He who has a why to live can
bear almost any how.

अफ्रीका के अलबात्रा प्रांत में जन्मी एक
महिला जब 19 माह की थी तब वह अंधी-
बन्दी हो गई थी। लेकिन उसे जीना था
वह अच्छा जीवन जीना था। 'कैसे जीना है।'।
इसका समाधान खोजा। प्रारंभ में उसने
स्पर्श भाषा सीखा, फिर आगे चलकर ब्रेल
लिपि का आविष्कार किया ताकि अपनी
भाषनाओं से व्यक्त हो सके। यह इहानी
है। हेलेन केयर की, जिसने जीने की
इच्छा और कुछ संकल्प ने न केवल स्वयं
को बल्कि सभी सुविधाधर लोगों को सुदृढ़
का उत्तर देना।

दक्षिण अफ्रीका में नदलीय

मैन्गाव पद पद था। अपार्थाइड नीति
'हाल' लोगों को, संस्थागत रूप से,
स्वास्थ्य, शिक्षा एवं रोजगार जैसे मूलभूत
सुविधाओं से वंचित रखती थी। अन्तरे
समाज से आने वाले नेल्सन मंडेला
ने इस संस्थागत व सामाजिक मैन्गाव से

अद्वैत लोगों से मुक्ति दिलाने की हानी। उनके
सामने यह प्रश्न था - अपने इस 'मैं' (समानता की प्राप्ति) के लिए 'सुई' का
उत्पन्न होना। उन्होंने 'सुई' का हल सतत
संबंध के रूप में निकाला। 27 वर्षों तक
जेल में यातनाई झेली फ़ैसल के लक्ष्मण
अक्रिया के प्रथम अद्वैत दाख़्ख़ानि बने और
अपार्थागत नीति से समाप्त बिना।

म्यानमार में सैन्य तानाशाही
शासन से लोगों से मुक्ति दिलाने तथा
लोकतंत्र की स्थापना के लिए आंग-सांग-
सू-की ने 'सुई' का हल देना। वह
15 वर्षों तक नजरबंद रही। अपने परि
की प्रेरणा के प्रथम भी उससे नहीं मिल सके।
अपने 'संबंध और धर्म' से सैन्य तानाशाही
की पुनर्हीन की। अंग 2010 में प्रकाश
में लोकतंत्र की स्थापना हुई तथा
सू-की स्टेट सचिव बनी।

हत्तीसगढ में जन्मे दस

व्यक्ति की उम्र १ वर्ष की तब उसने
पिता से पृच्छा है कि घर का कार्य
मैंने ही मिलने वाली पेशान में फलना
था। पेशान सरसद कारलों की धीधी दफ्तार
तथा सरसरी बाहु की सुकती भत्त उर
रह गयी इस परिचार की माँ-जेंद की
आर्थिक स्थिति धनीय होती गई। फिर उसने
उसी ने सलाह दी कि वह शहर के
बैंक की साहब से मिले। लक्ष्मी जिला
मुख्यालय जाकर जिवापिचरी में दिवा।
मैंने प्र पेशान शुरू हो गया। उसी समय
उसने कानी कि हमें इस आर्थिक बहल्लो
से हूँ उरना है, मैं इस धनीय
स्थिति में निवतना है अतः हमें 'बड़ा साहब'
कनता ही होगा।

अब हमें सायने जवाल
या आखिर हैल? उस हैल में
उसने अपने जी लो देवत ओर
सतत परिश्रम है रूप में हुंदा।
हमने अथवा प्रयास से आर्थिक
प्रशासनिक सेवा में योगिता भी हुआ।

इस पश्चात् उसने जीने का काम शुरू
करा और आधी रात में बहुत थकान महसूस
की। वह बिना सोये चले गये।
विरा ही उस गया है—

‘सौदागरी नास्ति असाध्यम् ।’

महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से
जब भारत लौटते थे उन्होंने देखा कि
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व और
इसमें भागीदारी केवल सांग्रान्त लोगों तक
सीमित था। डिफरन्स और मजदूरों, जो
अधिसंख्यक थे, इसी सोई चर्चा था भागीदारी
नहीं थी। साथ ही कुल लोगों से यह
भी स्पष्ट था कि अंग्रेजी शासन अच्छा है
केवल यही है अंग्रेज भाषी अफ्रीका
है। साथ ही कुआ-कुआ भी ध्यान था।

अब महात्मा गांधी ने सापने बुझा दी थी—
अधिसंख्यक-मजदूरों से स्वतंत्रता संग्राम के
बादिल उड़ने की। अंग्रेज, लोगों से

इस वास्तविकता की अनुभूति इतना रि-
ब्रिटिश कालन शोषणकारी है। तृतीय,
समाज के व्याप्त भेदभाव, दुःख-दुःख से
समाप्त करना।

गान्धीजी के समय भी यह प्रश्न
था 'कौन'? इसके लिए उन्होंने लाल,
अहिंसा, भूख हड़ताल, असहयोग, सक्रिय
अज्ञान जैसे पंगों का प्रयोग किया
तथा भाव निपटण से 'स्वशासन' की
स्थापना का प्रयास किया। गान्धीजी
के अहिंसात्मक प्रतिरोध के अर्ध ब्रिटिश
सत्ता के आधुनिक विचार भी कुँद
हो गए। गान्धीजी का लक्ष्य था स्वशासन
के साथ देश की स्वतंत्रता। उन्होंने अपने
एक विचार, धर्म, साहस इत्यादि के
माध्यम से प्राप्त किया। इसलिए जब
भी स्वतंत्रता संग्राम की बात होती है
महात्मा गान्धी का नाम सबसे पहले
लिखा जाता है। इसी का परिणाम है
कि उन्हें राष्ट्रपिता कहा जाता है।

इतना ही नहीं, आज
भी कोई अपने हक की मांग उठाता
है तो वह 'गोष्ठीवादी' किरीच और
फर्शन का प्रहरा लगा है।

गौतम बुद्ध ने लाखवीं
संसार से ~~है~~ का अवलोकन किया
और पाया कि - ~~संसार~~

॥
संसार दुःखों से भरा है,
दुःख का कारण भी है,
दुःखों का निवारण भी है॥

अब उनसे साफ़री इस प्रश्न
दुःख का दुःख का निवारण कैसे है?
6 वर्षों की उमिर तपस्या के बाद उन्हें
जान प्राप्त हुआ और इससे लिए
उन्होंने अपरिग्रह मार्ग की शुरुआत।
यही अपरिग्रह मार्ग है —

साध्य है दृष्टि,
 साध्य है संकल्प,
 साध्य है वात,
 साध्य है उर्मल,
 साध्य है जीविका
 साध्य है आचार्य
 साध्य है स्मृति
 साध्य है समाधि।

गौतम कुछ से इन विचारों

ने न केवल लब्धाकीन समाज की
 समझपाओ से इस डिचा बलि आज
 भी प्राप्त किए हैं। इसलिए उन्हें एतदिन
 धर्मोत्तम ने 'लाइफ ऑफ योशिया' उक्त
 की संज्ञा दी।

इसलिए मनुष्य के जीवन में
 इस प्रश्न का होना आवश्यक है कि
 जीवन क्यों जीना है? लक्ष्यविहित
 लक्ष्य दिशाहीन होता है। उससे
 कोई पैर उठा गया ~~उत्था~~ है कि

“सुख ही है, श्राप ही है
जिन्हीं में ही तपाप ही है।”

आदि मनुष्य के पास
'बुराई' होगा तो उसे प्राप्त करने
के लिए वह 'सुख' को छूट लेगा।
इससे वह बुरा हो जाएगा -

हृदं प्रसन्नं शक्ति

हृदं क्लेशशक्ति

हृदं उपनिषदा ॥

(82) उत्तर राज्य वह दुर्ग है जहाँ तब तक वे अल्प
और उधारें हावी हैं।

अरुण नामक कुछ एक पढ़ा-लिखा इंसान था।
वह सोशल मिडिया और आधुनिक तकनीक
का उपयोग अपनी से उत लेता था। उसके
फॉन्ट में उसी में भी इसी की जगह
हम और यही जैसी बीमारियों से ग्रस्त थी।
उसकी माँ का इलाज बाहर से कुछ निजी
अस्पताल में ही रहा था तथा डॉक्टर द्वारा
दिए गए दवाओं से, हालत में सुधार भी
आ रहा था।

एक दिन अरुण ने सोशल
मिडिया पर खबर देखी कि "बाहर से
कभी अस्पतालों में लेबी और हम जैसी
बीमारियों की नकली दवाओं की सप्लाई
हो रही है जिससे आपसी या आपके डीपी
की हो सकती है मौत! सावधान रहें!
सुदृष्ट रहें!"

इस खबर से हैरत अरुण ने
अपनी माँ की दवाई बन्द कर दी। उसी
माँ की हालत धीरे-धीरे बिगड़ने लगी।
जब हालत निपटण से बहा हो गया

तब वह माँ से लेकर डॉक्टर से
 सब पूछा, लेकिन उसी माँ ने ही
 वचन पाई। मन में दुःख और पीड़ा
 से भरा अरुण जब बल रखकर से
 सच्चाई जाननी चाही तो पता चला
 की यह सब कैरु न्युज थी। वह
 आपत्तिकादि से भरे गये थे।
 उसी नाहानी और कैरु न्युज पर
 भरोसा करने से अरुण उसने अपनी
 माँ से दूरी बिधा था।

अरुण की कहानी का
 मर्म पोस्ट टुथ समाज की सच्चाई से
 जोड़ता है। पोस्ट टुथ समाज कैसा
समाज होता है जो तथ्यों से
बुझ दखल होता है। जहाँ आपनाई
सबे व्यक्तित्व आधारणाएं अधिक होती
होती हैं।

पोस्ट टुथ का उदाहरण जीवन
 के हर पहलु, व्यक्तित्व, सामाजिक,
 आर्थिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक/सांख्यिक
 इत्यादि में देखा जा सकता है।

इसका पहला उदाहरण, हम व्यक्तिगत रूप में देख सकते हैं। इस पॉवर बुक समाज में पूर्णतः व्यक्तिगत अपना प्रयोग इस प्रकार होता है कि किसी व्यक्ति को लौंग मधीय मान लेते हैं। जबकि संकेंचित ब्रांड से एवं उसी पदार्थों को अच्छा मान लेते हैं। इससे पीछे मुख्य क्या है? इस बात को जानने बिना। कोई ब्रांड या व्यक्ति जिस कारण प्रसिद्ध हो रहा है की प्रतीति है या गलत यह कोई नहीं जानना चाहता है।

इसका दूसरा उदाहरण, समाज में रूप में देखने को मिलता है। एक समाज में लोगों में दूसरे समाज में लोगों में प्रति, गलत और भ्रम स्वकी को मुख्य करता है, ईश्वर इत्यादि और नष्टत भरा जाता है। इसका परिणाम है जातीय तनाव, हिंसा, संघर्ष इत्यादि देखने में रूप में देखने में मिलता है।

गलत सूचनाओं से हमें हानि है और
समाज के अंधविश्वास से कृत्रिमता
फैलाया जाता है। बल प्रसार पॉलिटेक्निक
समाज के तरीके का उपयोग करने
की वैज्ञानिक सोच से बचावा देने
से सौदा जाता है,

इसका लक्ष्य उदाहरण है, गलत
सूचनाओं से आधार पर बाजार से
प्रभावित करने का प्रयास किया जाता है।
जैसे शीघ्र बाजार, यहाँ दाऊ, गलत
सूचना अथवा फेक न्यूज निर्देशों
का लावो - छोटी रूपों का उद्घाटन
करना करते हैं।

इसका योधा उदाहरण है, राजनीतिज्ञ
हमारे देश में लोगों को सूचनाओं से बहुर
अपने अपने नेता का बल का उपयोग
करते हैं। इन्हें लक्ष्यों और वास्तविकता
से कोई मतलब नहीं होता है। उन्हें
कुछी तरह अपने हक से गले
सिद्ध करना होता है। इतिहास

इस जगह है कि पॉइंट टूथ संपाज
में लोग 'सूट सी खेती' करते हैं।

अब सवाल उठता है कि क्या,
फंड न्यूज, अफवाह इत्यादि, जो पॉइंट टूथ
संपाज का भाष्य निर्मित होता है, क्या
सोशल मिडिया और तकनीक से हैन है?

इसका जवाब है: नहीं। भले
ही 'पॉइंट टूथ' शब्द 2016 में ऑक्सफोर्ड
डिक्शनरी द्वारा 'वर्ड ऑफ द ईयर' घोषित
होने से बाद से हुआ है लेकिन फंड
न्यूज, अफवाह पहले भी था जब इंटरनेट
और सोशल मिडिया नहीं था।

लेकिन सोशल मिडिया से
आने से पूर्व फंड न्यूज और अफवाह
'पैल' चलते लोगों तक पहुँचती थी क्योंकि
आज इसी वजह से वाहान से भी तेज
हो चुकी है। अर्थात् पूर्व में भी
गलत सूचना और अफवाहों से निहित

स्वाध्याय के लिए नलाया जाता था
जैसा उससे प्रसाद की व्यापकता और
गति उद थी।

वास्तव में समाज बनने के
लिए सबसे ^{ज्यादा} जरूरी है उपमोक्षावाद।
उपमोक्षावाद ने हमें यह चीज हमें बजाती है
उस दिया है। नई वह शिक्षा है
स्वास्थ्य है। युग है। मनोरंजन है।

शिक्षा के बजाती है
गुरु-शिष्य की परंपरा समाप्त हो,
विद्यार्थी के प्रोडक्ट बनना दिया है।

स्वास्थ्य के बजाती है और
उपमोक्षावाद के कारण चिकित्सा और
चिकित्सा अनुविद्यालय प्रदान करने के साथ
साथ शौच - अजीब है कि हमें क्या
हमारे हैं। विभिन्न चिकित्सा और
और दवा उपचारों के बीच आपसी
प्रतिस्पर्धा के कारण यह वास्तव में
समाज बनने के प्रयास बनने हैं।

न्यूज के काजरी उगा न सक्ते
उपादा मुसलम डिवा है। 'न्यूज' को
सब उपादा के रूप में बचने का
इकाव सभी मिडिया हाउस पर रहता है,
जैसे से आउटफिल जूने के लिए
रक्खों से सनसनीखेज बनाया जाता है
ताकि लोग न्यूज का उपादा है
उपादा उपमागा डरे।

आज के पॉइंट टुच युग
में मिडिया सिमिलर धराओं में
बंटा हुआ है। जाफा सभी मिडिया
हाउस के अपने अपने राजनीति
आकाश है। कुछ ही मिडिया हाउस
हैं जो निष्पक्षता से चर्चा करते हैं।
~~आरत~~ बड़ा स्वतंत्रता आशंकित है
भारत का रैंड 159 रैंड बलडी
छुट्टि डरता है।

मिडिया हाउस अथवा सौदाग
मिडिया पर मोठूह पत्रिका अपने अपने
राजनीति छुटल के अनुसार रक्खों
की लोडफ्रेड डर जांगो के सामने

करती है।

इस प्रकार पाँचर दूध कुआ में
तृणों से परे जाऊ माँवाओं/धारागाओं से
महत्व दिया जाने लगा है। इसका सफल
उपाय कुशलता जोड़ाईत दूधों, माँवाओं
सोँदाई, वैदिक ब्राह्मण इत्यादि
से हुआ है।

संज्ञा में ऐसे पद जैसे दूधजन
कराने से आवश्यकता है जो —

—तृणों से महत्व है,
वैदिक सोच से बढ़ावा है,
तर्क और दाय से जीत है,
अपवित्रता और अपवादों पराजित है,
अहाँ हर विद्या जोया परखा जाइ और
ज्ञान की शैली हर दिशा में फैली ॥

1. (823) जीना उठर रहना है, जीकर रहना उस उठर में अर्थात् जीना।

क्रेडिट नीली है पिछा में जीवन संघर्ष, दुःख, उठर और अनैस पड़ा हो समस्याओं से भरा है। हमें इन समस्याओं से 'आपदा में अवसर' के रूप में लेना चाहिए, जिससे हमारा जीवन सुगम और सुशाल हो सके।

जीवन के हर पड़ाव पर इंसान के सामने चारिवाहि, आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक, राजनीतिक, ^{मानसिक} और नैतिक समस्याएं आती रहती हैं। जो व्यक्ति इन समस्याओं से धैर्य के साथ सहन कर सके ~~निरंतर जाता है~~ ^{है} जाता है वह दुर्लभ की भांति निरंतर जाता है।

जोहा जब आता है
तपकर हचोई रा बार सहने के
बाद भी 'अंगभीरु' रहता है, जो
(आंगीकृत)

उसरी उपयोगिता और मूल्य बढ़ जाता है
मनुष्य भी जब हल्ला ही बिट्ट
परिस्थिति में दूला नहीं तो उसका
अस्तित्व और निरुद्ध आता है।

नैल्सन मंडेला को 27
वर्षों तक जेल में रखा गया।
पातनार्थ ही जेल। फिर भी वं दूरे
गधी, बलिष्ठ दृढ़ इच्छाशक्ति से दुःखों
को झेला और अश्वेत लोगों से
लिया समानता का अधिकार पाने
में सफलता पाई।

फिर, क्या जब तक पत्था
रहता है, जबतक कि वह प्रतिष्ठित
सी हैनी - हथौड़ी की चार झेलन
ले। एडवर्ड मूर्तिशर से धर्मों का
बद झेल लेने से बाद उस
पथर से पूजा लेने लगती है।
(पूजनीय हो जाता है)

पह बात बाबासाहेब गोपराव अंबेडकर
पर लागू होती है। उन्होंने अपने जीवन
में अनेक बुराई और, भ्रष्टाचार और
उत्पीड़न झेलकर किङ्ग साबल सी।
उन्होंने दलितों को आवाज दी, उन्हें
अपिश्रम दिलाया, उन्हें सम्मान दिलाया।
यही शरण है कि बाबासाहेब
आज पूजनीय हैं।

इसी प्रकार, मिट्टी को जब
कुम्हा अच्छी तरह से रूँधता है,
पाउर पर खड़ा हवाव देकर निश्चित
आश्चर्य देता है, फिर उसे साफ पं
पड़ता है। इस प्रकार उर्द पदार्थों
की प्रतिष्ठा से गुजरने से बाद
मिट्टी एक उपयोगी कच्चा सा रूप
लेता है।

इसी तरह मनुष्य केवल
एक समस्या को नहीं झेलता बल्कि
समस्याओं को झेलता है और झेलता

यह उपयोगी अर्थार्थ सफल व्यक्तित्व बनता है।

सफलता के लिए व्यक्ति को
दुःख, कष्ट, बीमारी, अपमान इत्यादि से
अज्ञान पड़ता है। महात्मा गाँधी जी जब
पीरमैडिल्लार्क इन्डियन पर डेन से बाहर
रुका दिया गया तो इस अपमान से
कहोमत उठते हुए गाँधीजी ने दक्षिण
अफ्रीका में स्वातंत्र्य की लड़ाई में
लगा रंगरेड की नीति का विरोध
दिया।

दक्षिण अफ्रीका में बिर्से गए लोगों
का अनुभव ही था जिलने गाँधीजी
की अन्य संस्थाओं सेनागियों से अलग
बनाया। गाँधीजी ने इस अनुभव से
मादर दे, और लापरवाह बनाया। इस
प्रकार उन्होंने भारतीय संस्थाओं में
में अलग ही अलग किया।

इस चर्चे में हम राजाशय मोहन
 राय से कुछ मूल सस्ते हैं? 1829
 में किलिपद कैंटिड का सुली प्रया
 का प्रारंभ किया गया। यह चर्चा चर्चा
 राजाशय मोहन राय से संबंधित है और
 पारिवारिक था। उन्होंने समाज में महिलाओं
 के प्रति इस जघन्य अपराध को
 स्थापित करने का प्रयास बनाया और
 उद्दण्डितों से तत्त्वों के छोड़ किंचित
 के वास्तविक इस चर्चा के संबंधित
 नहीं और उन्हें प्राप्त किया।

कि प्रथम। इस में, जब
 कैंटिड चर्चा में जाता आ गई थी,
 सामाजिक उद्दिष्टों पर थी। इसी
 विषय में उन्होंने समाज में व्याप्त
दुःख के कारण को जानने का
 प्रयास किया। अपने तपस्या और
 ज्ञान से यह पाया कि -

'जीवन दुःखों से भरा है। दुःखों का
निकासन इन रूपों से करने की शक्ति
उत्पन्न करने दे है। इन रूपों को
मिलने से प्रादुर्भाव उत्पन्न करने हेतु उन्हीं
'अष्टांगिक मार्ग' का प्रतिपादन किया, कि है—

साम्यसु सुखि
 साम्यसु संतुष्ट
 साम्यसु का
 साम्यसु उदात्त
 साम्यसु आजीविता
 साम्यसु व्यापार
 साम्यसु दृष्टि
 साम्यसु समाधि।

कुछ से सब अष्टांगिक मार्ग
 से साम्यमार्ग भी उठा जाता है। ~~नियम~~

साम्यमार्ग का सेकल उठा काल
 है, दुःखों, सुखों और अपराधों के निकासन
 लिए, कलिक आज के समय में भी
 प्रासंगिक हैं। अती दुनिया की सबसे
 बड़ी समस्या है गरीबी, गरीबी को

कहाने के लिए उत्तरदायी है पहचाने,
महंगाई से कहाने से विश्व ^{सिम्बोल} ~~अर्थपूर्ण~~
है वैश्विक तनाव, युद्ध, डेडकार-

सीमा अतिरिक्त, संस्थाओं से हटने
का प्रयास इत्यादि। इन सारी समस्याओं
से कुछ से मध्यमार्ग द्वारा सुलझाया
जा सकता है।

अंतर: उल्टे जीवन का अपरिचित
हिस्सा है। मनुष्य से लिए आवश्यक
है कि वह दुःख ~~हो~~ सीख ले -

अंधकार में प्रकाश
संघर्ष में विजय
निराशा में आशा।